DOI: 10.51220/hjssh.v2i1.11

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 2 pp. 90-93, 2007

पर्यावरण संरक्षण व परिशोधन में यज्ञीय ऊर्जा की महत्ता

कुसुम डोबरियाल

संस्कृत विभाग हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर पौड़ी

ABSTRACT

पर्यावरण संरक्षण एवं परिशोधन वर्तमान शताब्दी की सर्वप्रथम अनिवार्यता है। वृक्षारोपण, जलीय शुद्धीकरण तथा ठोस अपशिष्ट व्यवस्थापन के अतिरिक्त प्राचीन काल से चली आ रही धार्मिक परम्परायें भी इस कार्य में सहायक हैं। प्रस्तुत शोधपत्र यज्ञीय ऊर्जा का पर्यावरण परिशोधन में महत्त्व पर प्रकाश डालता है।

Key words :- Environmental purification through yagnans.

पर्यावरण का हमारे स्वास्थ्य से सीधा सम्बन्ध है। जब तक मनुष्य का हस्तक्षेप प्रकृति में नहीं होता, तब तक न गंदगी होती है और न पर्यावरण प्रदूषण का शिकार बनता है। आज विश्व में औद्योगिकीकरण के कारण प्रदूषण तीव्रगति से बढ़ रहा है। वायुमण्डल में बढ़ते हुए प्रदूषण ने कार्बनडाइआक्साइड की मात्रा को इतना अधिक बढ़ा दिया है कि वैश्विक ऊष्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग) के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है जो भविष्य के लिये प्रलय का कारण बन सकता है। अतएव यह मनुष्य के हित में है कि वह समय रहते प्रकृति के साथ सहयोग करे।

पर्यावरण परिशोधन में वृक्ष–वनस्पतियों का महत्वूपर्ण योगदान है। इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति में पर्यावरण शोधन हेतु एक अन्य महत्पूर्ण प्रक्रिया का वर्णन मिलता है जिसे हमारे ऋषि–मुनि एवं पूर्वज वर्गो से प्रयोग में लाते आ रहे हैं। यह विधि है–यज्ञ एवं यज्ञीय ऊर्जा अर्थात अग्निहोत्र प्रक्रिया। यज्ञ देवता की प्रतिष्ठापना इस युग की अहम, मांग है जिस प्रकार जीवाणु रोधक रसायनों द्वारा विशाणुओं को मारा जाता है उसी प्रकार वायु–प्रदूषण के निराकरण में अग्निहोत्र प्रक्रिया (यज्ञ) की विशिष्ट भूमिका है।

यज्ञ संस्कृति भारतीय संस्कृति की एक पुरातन प्रक्रिया है, यज्ञ से आरोग्यबर्धक कणों का निर्माण होता है। दूसरे इससे वायुमण्डलीय प्रदूषण का भी सतत शयन होता रहता है। जड़ी–बूटियों का यजन अपने आप में महत्वपूर्ण है इससे स्थानीय पर्यावरण तो औशधियुक्त बनता ही है इसका अनायास लाभ वहाँ के निवासियों को भी मिलता है। यज्ञ का भारतीय संस्कृति में अविछिन्न स्थान है। यज्ञ की महत्ता को विद्वतजनों ने दार्शनिक एवं वैज्ञानिक रूप से विष्लेशित किया है।[1] आजकल

© SHARAD

लोग घरों, कारखानों तथा परिवहन सम्बन्धी माध्यमों से हवा, पानी और मिट्टी में अंधाधुन्ध दूषित पदार्थ प्रवाहित कर रहे हैं। मनुष्य के लिये सांस लेने के लिये स्वच्छ वायु का मिल पाना कठिन हो गया है। भौतिक व प्राण ऊर्जा के समन्वय से एक तीसरी शक्ति के आविर्भाव में ऋषियों ने एक अन्य ऊर्जा का जिसे (यज्ञाग्नि) के नाम से जाना जाता है, सफलता प्राप्त की। इस यज्ञीय ऊर्जा का प्रयोग सृष्टि व समाज में संतुलन को बनाए रखने में विशेष रूप से हुआ है। मनुस्मृति[3] के अनुसार भी यज्ञ संस्कृति की विशेष रूप से सराहना की गई है। मनुष्य सामान्य काया को यज्ञ विद्या के सहारे ब्राह्मीय–देवत्व सम्पन्न बना सकता है।

वैदिक धर्म को पर्यावरणीय दृष्टि से यज्ञों का धर्म कहा जाता है। पूर्व मीमांसाकार जैमिनी ने भी पर्यावरण की शुद्धीकरण के साथ नित्य नैमिषिक यज्ञादि करने से सच्ची युक्ति प्राप्त होने की बात कही है। भारतीय संस्कृति के पंचमहायज्ञों में देवयज्ञ (हवन) की महिमा आर्श ग्रन्थों में वर्णित है। ऋग्वेद[3] के प्रथम मंत्र के प्रथम चरण में यज्ञाग्नि को पुरोहित अथवा मार्गदर्शक कहा गया है। यज्ञाग्नि के वैज्ञानिक स्वरूप में प्राण ऊर्जा से लेकर ब्रह्म ऊर्जा तक की प्रमुख पांच अग्नियों को ज्वलंत किया है। एतरेय ब्राह्मण[4] में भी उल्लेख है कि (अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः)। स्वर्ग की कामना वाले को यज्ञ करना चाहिए। अग्निहोत्र थैरेपी द्वारा वैज्ञानिकों ने पाया है कि जहाँ पर याज्ञिक क्रियायें यानी यज्ञ किया जाता है वहाँ जमीन में नमी बनी रहती है। सिंचाई के साथ–साथ फसल के उत्पादन के साथ गुणवत्ता की दृष्टि से भी याज्ञिक खाद पौधों के लिये टॉनिक का काम करती है। आध्यात्मिक दृष्टि से यज्ञ के और भी अर्थ है–ब्रह्म यज्ञ, तपोयज्ञ, योगयज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, दानयज्ञ, ज्ञानयज्ञ आदि। महर्षि दयानन्द सरस्वती[5] ने भी प्रत्यक्ष प्रमाण भूत अग्नि की महत्ता एवं पवित्रता के सन्दर्भ में पर्यावरणीय दृष्टि से आज के सन्दर्भ में बड़ी उपयोगी जानकारी दी कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु और जल से आरोग्यता और सुख की प्राप्ति होती है, घर में रखे पुष्प व इत्र आदि की सुगन्ध में वह सामर्थ्य नहीं है कि वह दूषित वायु बाहर निकालकर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके क्योंकि उनमें भेदक शक्ति नहीं के बराबर है। यह मात्र अग्नि की ही सामर्थ्य है कि वह प्रदूषित वायु को व दुर्गन्धयुक्त पदार्थो छिन्न–भिन्न कर अथवा जलाकर पवित्र वायु को प्रवेश करा देती है।

श्रीमद्भगवतगीता[6] में भी यज्ञ से वृष्टि होने की बात स्वीकार की गई है जो अन्नादि की उत्पत्ति में सहायक है। यही वृष्टि पर्यावरण शोधन में भी सहायक व उपयोगी सिद्ध होती है–

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।

ऋग्वेद के अनुसार मानव सभ्यता के विकास में अग्नि का अद्वितीय स्थान है ऋग्वेद अग्तिसूक्त में "अग्निमीले पुरोहितम् यज्ञस्य देवम त्विंम्" तथा पुरूष सूक्त के मंत्र में "यज्ञेन यज्ञमयंन्तः देवाः" में अनेक विभूतियों दशरथनन्दनों, द्रोपदी आदि के अभिवर्धन की बात कही गई है। ऐसे कई प्रसंग हमारे पुराणों उपनिषदों में भी वर्णित हैं जो वायु जल व पृथ्वी के सन्तुलन को याज्ञिक क्रियाओं द्वारा शुद्ध करने में सक्षम हैं। कठोपनिषद का "यम–नचिकेता संवाद" जिसमें पंचाग्नि विद्या (यज्ञ) का सुविस्तृत उल्लेख है।

पर्यावरणीय परिशोधन में यज्ञ के निमित्त अग्नि में डाले जाने वाले पदार्थ घी, चन्दन, नगरमोथा, तिल, अगर, कपूर, आदि प्रज्वलित होकर दूषित वायु को शुद्ध कर आरोग्यवर्धक कणों का निर्माण करते हुए (विशैले तत्वों) प्रदूषण का शमन करते हैं। वातावरण जिसमें हम रहते हैं–चेतनात्मक है। मनोविज्ञानी व पाश्चात्य मनीषी भी मानते हैं कि पर्यावरण का प्रभाव न केवल स्वास्थ्य बल्कि मानव के मन–विचारों तक को प्रभावित करता है। वनौषधियों जैसे तुलसी, पोदीना, अश्वगन्धा, पीपल, आंवला, गूलर, निर्गुडी, पुर्ननवा जैसे वृक्षों को लगाने से पर्यावरण स्वच्छ बनता है। वैज्ञानिक शोध के अनुसार डॉ० मनोज गर्ग[७] ने यह पाया कि यज्ञ कृषि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिये सर्वप्रथम उपयोगी तो है ही साथ ही यह निष्कर्ष भी निकले कि पानी में उपस्थित विजाणु (वैक्टीरिया) की मात्रा यज्ञ से पूर्व ४५०० थी जो यज्ञ की अवधि में २४७० और यज्ञ के पश्चात् मात्र १२५० रह गयी। इसी तरह वायुमण्डल में सल्फर डाइआक्साइड व नाइट्रस ऑक्साइड आदि गैसों की मात्रा में भी यज्ञ के बाद न्यूनीकरण पाया गया।

निष्कर्ष रूप में यज्ञ संस्कृति का न केवल व्यक्ति विशेष वरन् व्यापक वातावरण पर उपयोगी प्रतिक्रिया होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

१. पं० श्रीराम शर्मा आचार्य (२०००) युगधर्म–पर्यावरण संरक्षण गायत्री ट्रस्ट प्रकाशन हरिद्वार।

२. मनुस्मृति

३. ऋग्वेद

४. ऐतरेय ब्राह्मण– ७/१

५. सत्यार्थ प्रकाश, ४०–४४

६. श्रीमद्भागवद्गीता, अ० ३/१४–१५

७. डॉ० मनोज गर्ग, निदेशक, पर्यावरण एवं तकनीकी सलाहकार उ०प्र० द्वारा शोध–युगधर्म पर्यावरण संरक्षण गायत्री ट्रस्ट प्रकाशन हरिद्वार से उद्धृत–पृ० १६०।